15

उत्तररामचरित-चित्र दर्शन-2

पूर्व पाठ में हमने राम, सीता और लक्ष्मण विवाह वृतान्त के आगे अयोध्या कैसी थी, यह देखा। विराधवृतान्त, मन्थरावृतान्त गुहसाक्षात्कार इत्यादि को हम देख चुके। इस पाठ में सीता चित्र में राम लक्ष्मण के जटा संयमनवृतान्त को देखती है। उसके बाद वन मार्ग से जाते समय उनके द्वारा जो प्राकृतिक सौन्दर्य का अवलोकन किया गया उसके चित्रों को देखती हैं। इस प्रसंग में भागीरथी नदी, श्यामनामक वटवृक्ष, प्रस्रवणनामक पर्वत, विध्याचल वन इत्यादि का चित्र दर्शन इस पाठ में देखते हैं।

उद्देश्यः-

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे :

- राम और सीता के कुछ विशेष गुणों को जान पाने में;
- भागीरथी, श्याम वृक्ष, प्रस्रवण पर्वत, विन्ध्यारण्य के बारे में जान पायेंगे;
- सीता और राम के सुदृढ़ प्रेम को समझ पायेंगे;
- छन्दों के लक्षणों को समझ पायेंगे;
- श्लोकों के अन्वय का प्रतिपदार्थादि को जान पायेंगे और;
- दीर्घ पदों के विग्रह वाक्य और समास को समझ पायेंगे।

15.1 सम्पूर्ण पाठ

सीता- अह्यो एसो जडासंजमणवुत्तन्तो। (अहो एष जटासंयमनवृत्तान्तः।)

टिप्पणी

लक्ष्मण- **पुत्रसङ्क्रान्तलक्ष्मीकैर्यद् वृद्धेक्ष्वाकुभिर्धृतम्।**
धृतं बाल्ये तदार्येण पुण्यमारण्यकव्रतम् ॥22॥

सीता- एषा पषण्णपुण्णसलिला भअवदी भाईरही। (एषा प्रसन्नपुण्यसलिला भगवती भागीरथी।)

राम- रघुकुलदेवते! नमस्ते।
तुरगविचयव्यग्रानुर्वीभिदः सागराध्वरे
कपिलमहसा रोषात्प्लुष्टान् पितुश्च पितामहान्।
अगणिततनूतापस्तप्वा तपांसि भगीरथो
भगवति! तव स्पृष्टानद्भिश्चिरादुदतीतरत्॥23॥
सा त्वमम्ब! स्नुषायामरुन्धतीव सीतायां शिवानुध्याना भव।

लक्ष्मण- एष भरद्वाजावेदितश्चित्रकूटयायिनि वर्त्मनि वनस्पतिः कालिन्दीतटे वटः श्यामो नाम।

(रामः सस्पृहमवलोकयति।)

सीता- सुमेरदि वा तं पदेसं अज्जउत्तो? (स्मरति वा तं प्रदेशमार्यपुत्रः?)

राम- अयि कथं विस्मर्यते?

अलसललितमुग्धान्यध्वसम्पातखेदा
दशिथिलपरिम्भैर्दत्तसंवाहनानि।
परिमृदितमृणालीदुर्बलान्यङ्कानि
त्वमुरसिममकृत्वायत्रनि द्रामवाप्ता॥24॥

लक्ष्मण- एष विन्ध्याटवीमुखे विराधसंवादः।

सीता- अलंदाव एदिणा। पेक्खम्मि दाव अज्जउत्तसहत्तधरिदतालबुन्तादवत्त-निवारिदादपं दक्खिणारण्णप्पवेशारम्भम्। (अलं तावदेतेन। पश्यामि तावदार्यपुत्रस्वहस्तधृततालवृन्तातपत्रनिवारितातपमात्मनो दक्षिणारण्यप्रवेशारम्भम्।)

एतानि तानि गिरिनिर्झरिणीतटेषु वैखानसाश्रिततरूणि तपोवनानि।
येष्वातिथेयपरमा यमिनो भजन्ते नीवारमुष्टिपचना गृहिणो गृहाणि॥25॥

लक्ष्मण- अयमविरलानोकहनिवहनिरन्तरस्निग्धनीलपरिसरारण्यपरिणद्ध-गोदावरीमुखरकन्दरः सन्ततमभिष्यन्दमानमेघमेदुरितनीलिमाजनस्थानमध्यगो गिरिः प्रस्रवणो नाम।
स्मरसि सुतनु तस्मिन्पर्वते लक्ष्मणेन
प्रतिविहितसपर्यासुस्थ्योस्तान्यहानि।
स्मरसि सरसनीरां तत्र गोदावरीं वा
स्मरसि च तदुपान्तेष्वावयोर्वर्तनानि॥26॥
किं च,
किमपि किमपि मन्दं मन्दमासत्तियोगा

टिप्पणी

दविरलितकपोलं जल्पतोरक्रमेण।
अशिथिलपरिरम्भव्यापृतैकैकदोष्णो
रविदितगतयामा रात्रिरेव व्यरंसीत्॥27।

लक्ष्मण– एषा पंचवटयां शूर्पणखा।

सीता– हा अज्जउत्त, एत्तिअं दे दंसणं। (हा आर्यपुत्र, एतावत् ते दर्शनम्।)

राम– अयि विप्रयोगत्रस्ते, चित्रमेतत्।

सीता– जहा तहा होदु। दुज्जगो असुहं उप्पदेइ। (यथा तथा भवतु। दुर्जनः असुखमपुत्पादयति।)
राम: हन्त, वर्तमान इव मे जनस्थानवृत्तन्तः प्रतिभाति।

लक्ष्मण– अथेदं रक्षोभिः कनकहरिणच्छद्मविधिना
तथा वृत्तं पापैर्व्यथयति यथा क्षालितमपि।
जनस्थाने शून्ये विकलकरणैरार्यचरितै
रपि ग्रावा रोदित्यपि दलति वज्रस्य हृदयम्॥28॥

15.2 मूलपाठ

सीता– अह्यो एसो जडासंजमणवुत्तन्तो। (अहो एष जटासंयमनवृत्तान्तः।)

लक्ष्मण– **पुत्रसङ्क्रान्तलक्ष्मीकैर्यद् वृद्धेक्ष्वाकुभिर्धृतम्।**
धृतं बाल्ये तदार्येण पुण्यमारण्यकव्रतम्॥22॥

सीता– एषा पषण्णपुण्णसलिला भअवदी भाईरही। (एषा प्रसन्नपुण्यसलिला भगवती भागीरथी।)

राम– रघुकुलदेवते! नमस्ते।
तुरगविचयव्यग्रानुर्वीभिदः सागराध्वरे
कपिलमहसा रोषात्प्लुष्टान् पितुश्च पितामहान्।
अगणिततनूतापस्तप्त्वा तपांसि भगीरथो
भगवति! तव स्पृष्टानद्भिश्चिरादुदतीतरत्॥23॥
सा त्वमम्ब! स्नुषायामरुन्धतीव सीतायां शिवानुध्याना भव।

अन्वय–

सीता– अहो एष जटासंयमनवृत्तान्तः।

लक्ष्मण– पुत्रसङ्क्रान्तलक्ष्मीकैः वृद्धेक्ष्वाकुभिः यत् (व्रतं) धृतं तत्पुण्यम् आरण्यकव्रतम् आर्येण बाल्ये धृतम्॥22॥

सीता– एषा प्रसन्नपुण्यसलिला भगवती भागीरथी।

राम– रघुकुलदेवते! नमस्ते। हे भगवति, भगीरथः अगणिततनूतापः सन् तपांसि तप्त्वा तव

टिप्पणी

अद्भिः स्पृष्टान् सगराध्वरे तुरगविचयव्यग्रान् उर्वभिदः रोषद् कपिलमहसा प्लुष्टान् च पितुः पितामहान् चिरात् उदतीतरत्।।23।।

सा त्वम् अम्ब! स्नुषायां सीतायाम् अरुन्धती इव शिवानुध्याना भव।

अन्वयार्थ-

सीता- अहो - आश्चर्य, एषः - यह, जटासंयमन वृतान्तः - जटाबन्धन का वृतान्त है।

लक्ष्मण- पुत्रसंक्रान्तलक्ष्मीकैः - जिनके द्वारा राज्य लक्ष्मी को पुत्राश्रित किया जाता है, **वृद्धेक्ष्वाकुभिः** - ऐसे ईक्ष्वाकुवंश के वृद्ध राजाओं द्वारा, यद् - जो धृतम् - धारण करते है, आरण्यकव्रतम्- वानप्रस्थ के व्रत को ग्रहण कर, तत्पुण्यम् - उस पवित्र पुण्य को, आर्येण- रामचन्द्र ने, बाल्ये- बालकाल में ही, धृतम् - धारण या स्वीकार किया।

सीता- एषा - यह, प्रसन्न पुण्य सलिला, पवित्र निर्मल जल से परिपूर्ण, भगवती - देवी, भागीरथी - गंगा।

राम- रघुकुल देवते - रघुकुल की देवी भागरथी, नमः - नमस्कार, ते - तुम्हे। हे भगवति - देवि, भागीरथः- हमारे पूर्वज राजा भागीरथ, अगणिततनुतापः- उपेक्षित शरीर दुःखी, सन् तपांसि **तप्त्वा** - होते हुए तपस्या करके, तव - आपको, अद्रि - जल से, स्पृष्टान् - स्पर्श को, **सगराध्वरे** - राजा सगर के यज्ञ में, तुरगविचयव्यग्रान्- घोड़ों के अन्वेषण में व्याकुल, उर्वीभिद् • पृथ्वी को खोदने वाले, रोषात् - क्रोध से, कपिलमहसा - कपिलमुनि के तेज से, प्लुष्टान् • जले हुए, पितुः - जनक के, पितामहान् - पितामह सगर आदि, आत्मजो को, चिरात् - बहुत समय के बाद, उदतीतरम् - उद्धार किया।

सा त्वम्- वह तुम भवती, अम्ब- हे माता, स्नुषायाम्- वधु को, सीतायाम् - सीता को, अरुन्धती- वसिष्ठ पत्नी अरुन्धवती के, इव - समान, शिवानुध्याना - मंगल चिन्तन वाली, भव हों।

व्याख्या-

सीता ने जटाबन्धन वृतान्त को देखा। राम लक्ष्मण ने शृंगवेरपुर में ही जटाबन्धन किया। यहाँ लक्ष्मण श्रीराम के व्रतपालन रूप गुण से इक्ष्वाकुवंशीय राजाओं की उत्कृष्टता का वर्णन करते हैं। इश्वाकुवंश के राजा सम्पूर्ण जीवन में राज्यसमृद्धि आदि सुखों का अनुभव करते हैं। जब वार्धक्य काल आता है। तब वे राज्य का भार पुत्रों के समर्पित करके वानप्रस्थ व्रत का आश्रय लेते हैं अर्थात् सभी प्रकार के सुखों को प्राप्त करके अन्त में वे व्रत को धारण करते हैं। किन्तु श्रीराम ने शिशु अवस्था में ही इस दुष्कर व्रत का आचरण किया। व्रतपालन के लिए उन्होंने वृद्धावस्था की अपेक्षा नहीं की। इस प्रकार श्रीराम ने बाल्यकाल में ही पवित्र वानप्रस्थश्रम का आचरण किया।

सीता चित्र में भागीरथी नदी को देखती है, जिसका जल निर्मल और पवित्र है। रघुवंश के पूर्वज भागीरथ ने तपस्या द्वारा इस नदी को स्वर्गलोग से पृथ्वी लोक को लाये थे। अत: वह भागीरथी रघुवंश की कुलदेवी है। उस नदी को श्रीराम नमस्कार करते हैं।

यहाँ श्रीराम गंगा के स्वर्ग लोक से भूलोक आगमन वृतान्त का वर्णन करते हैं। प्राचीन काल में सगर नामक राजा ने अश्वमेध नामक यज्ञ किया। अश्वमेध यज्ञ में अश्व ही प्रधान होता है। उस अश्व को इन्द्र ने कपट का आश्रय लेकर चुरा लिया और गुप्तस्थान पर स्थापित कर दिया। अश्व के बिना यज्ञ समाप्त नहीं होगा। अत: सगर के 60 हजार पुत्रों ने अश्व के अनुसंधान करते हुए पृथ्वी को खोद दिया। उनसे महर्षि कपिल किसी कारण से कुपित होते हुए उन सभी पुत्रों को भस्म कर दिया। भागीरथी जल के स्पर्श से ही उन पुत्रों का उद्धार हो सकता है। किन्तु भागीरथी तब स्वर्ग में थी। बहुतकाल बाद सगर के प्रपौत्र भागीरथ ने कठोर तपस्या से भागीरथी को भूलोक पर लाकर उसके जल से 60 हजार पुत्रों का उद्धार किया।

राम भागीरथी को अम्बा कहकर संबोधन करते हैं और सीता मंगल विधान के लिए प्रार्थना करती हैं।

विशेष टिप्पणी:-

शिवानुध्यानाभव - अर्थात् गंगा से सीता कल्याण कामना के लिए प्रार्थना करने की घटना से आगामी घटनाचक्र पर प्रकाश पड़ता है। अत: यहाँ मुख सधि का 'उद्भेद' नायक अंग है- उसका लक्षण- ''बीजार्थस्य प्ररोह: स्यादुद्भेद:''

व्याकरण विमर्श:-

पुत्रसङ्क्रान्तलक्ष्मीकै:-पुत्रेषु सङ्क्रान्ता पुत्रसङ्क्रान्ता इति सप्तमीतत्पुरुष:। पुत्रसङ्क्रान्ता लक्ष्मी: येषां तै: इति बहुव्रीहिसमास:।

आरण्यकम्- अरण्ये भवा इत्यर्थे अरण्यशब्दाद् वुञ्प्रत्यये आरण्यका: इति निष्पद्यते। आरण्यकानमिदम् इति विग्रहे आरण्यकशब्दाद् अणि आरण्यकम् इति रूपम्।

तुरगविचयव्यग्रान्- तुरेण गच्छतीति तुरग:। तस्य विचय: तुरगविचय: इति षष्ठीतत्पुरुष:। तस्मिन् व्यग्रान् तुरगविचयव्यग्रान् इति सप्तमीतत्पुरुष:।

उदतीतरत्-उत्पूर्वकात् तृधातो: णिचि लुङि उदतीरत् इति रूपम्।

छन्द:- तुरगविचयव्यग्रान् - श्लोक में हरिणी छन्द है

''रसयुगहयैर्न्सौम्रौस्लौ गौ यदा हरिणी तदा।''

पाठगतप्रश्न 15.1

1. राम लक्ष्मण का जटाबन्धन कहाँ हुआ?
2. इक्ष्वाकुवंशीय राजा कब वानप्रस्थ आश्रम का पालन करते हैं?

टिप्पणी

3. भागीरथी कैसी थी?

4. कौन भागीरथी को स्वर्ग लोक से भूलोक लाया?

5. राम की क्या प्रार्थना है कि सीता कैसी हों?

15.3 मूलपाठ

लक्ष्मण – एष भरद्वाजावेदितश्चित्रकूटयायिनि वर्त्मनि वनस्पतिः कालिन्दीतटे वटः श्यामो नाम।

(रामः सस्पृहमवलोकयति।)

सीता– सुमेरदि वा तं पदेसं अज्जउत्तो? (स्मरति वा तं प्रदेशमार्यपुत्रः?)

राम – अयि कथं विस्मर्यते?

अलसललितमुग्धान्यध्वसम्पातखेदा दशिथिलपरिम्भैर्दत्तसंवाहनानि।
परिमृदितमृणालीदुर्बलान्यङ्कानि त्वमुरसि मम कृत्वा यत्र निद्रामवाप्ता।।24।।

अन्वय-

लक्ष्मण– एष भरद्वाजावेदितः चित्रकूटयायिनि वर्त्मनि वनस्पतिः कालिन्दीतटे श्यामो नाम वटः।

(रामः सस्पृहम् अवलोकयति।)

सीता– आर्यपुत्र, तं प्रदेशं स्मरति वा?

राम– अयि कथं विस्मर्यते?

यत्र त्वम् अध्वसम्पातखेदात् अलसललितमुग्धानि अशिथिलपरिरम्भैः दत्तसंवाहनानि परिमृदितमृणालीदुर्बलानि अङ्गकानि मम उरसि कृत्वा निद्राम् अवाप्ता।।24।।

अन्वयार्थ-

लक्ष्मण– एषः – यह, भारद्वाजविदितः – भारद्वाज द्वारा निर्दिष्ट, चित्रकुटयायिनि – चित्रकूट जाने वाले, वर्त्मनि – मार्ग में, वनस्पतिः – वृक्ष, कालिन्दीतटे- कालिन्दी नदी के तट पर, वटः श्यामो नाम – श्याम नाम वाल वटवृक्ष

(रामः सस्पृहम् – उत्कण्ठा के साथ, अवलोकयति – देखते हैं।)

सीता– आर्यपुत्र– श्रीराम, तम् प्रदेशम्–, उस स्थान को, स्मरति वा– स्मरण कर रहे है क्या।

राम- अयि कथम् अरे किस प्रकार से, विस्मर्यते- भूल जाता हूँ। यत्र - जिस प्रदेश में, त्वम् - तुम सीता, अध्वसम्पातखेदात् -मार्ग गमन से श्रान्त दु:खित से, अलसललितमुग्धानि - आलस्य मुक्त ललित कोमल सुन्दर, अशिथिलपरिम्भै: - प्रगाढ़ आलिंग न से, दत्तसंवाहनानि - मर्दन करके को, परिमृदितमृणालीदुर्वलानि - कमल नाल की भाँति अपने दुर्बल, अंगकानि - शरीर के अवयवों का, मम - राम के, उरसि - दक्ष स्थल पर, कृत्वा - करके या रखकर, **निद्राम्** - निद्रा को, अवाप्ता - प्राप्त किया।

व्याख्या-

वनवास काल में महर्षि भरद्वाज ने उनके चित्रकूटवन के प्रति गमन मार्ग को ज्ञापित किया। उस गमन मार्ग में यमुना नदी के तट पर श्याम नामक वटवृक्ष को सीता देखती हैं। तब सीता राम का स्मरण करती हैं अथवा इस प्रदेश के विषय में पूछती है। तब राम कहते हैं कि उस प्रदेश का स्मरण संभव था। उसके बाद राम अविस्मरण का कारण कहते हैं। सीता मार्ग परिश्रम के कारण अतीव थक गई थी। सीता के अंग आलस्य युक्त थके हुए थे किन्तु वे उनके सौन्दर्य को नहीं छोड़ रहे थे। उसके थकावट को देखकर श्रीराम ने उसके कोमल अंगों को मर्दित किया। अत्यधिक थकी हुई सीता, तब राम को दृढ़ालिंगन प्राप्त करके उसके वक्ष के ऊपर ही स्थित होकर सो गई। इस प्रकार राम सीता के मध्य में प्रेम चातुर्य्य को प्रस्तुत श्लोक से वर्णित किया।

व्याकरण विमर्श:-

भरद्वाजावेदित: -भदद्वाजेन आवेदित: भरद्वाजावेदित: इति तृतीयातत्पुरुषसमास:।

चित्रकूटयायिनि-चित्रकूटं याति इति चित्रकूटयायि, तस्मिन् चित्रकूटयायिनि।

वनस्पति:- वनस्य पति:- पास्करादित्वात् सुट्।

छन्द:- अलसललितेत्यस्मिन् श्लोक में मालिनी छन्द है-ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकै:'' ।

अलंकार विमर्श:- अलसललिल--- श्लोक के आदि में मार्ग से परिश्रान्त, उसके बाद ललितत्व सौकुमार्य भाव, उसके बाद अशिथिल आलिंगन बाहुल्य, --- इत्यादि सभी पर के प्रति पूर्व हेतु होने से कारणमाला अलंकार है, उसका लक्षण-

परं परं प्रति यदा पूर्व पूर्वस्य हेतुता। तदा कारण माला स्यात्।।

पाठगतप्रश्न 15.2

6. भरद्वाज निर्दिष्ट वनस्पति का नाम क्या है?
7. वटवृक्ष किस नदी के किनारे है?

टिप्पणी

8. सीता के अंग कैसे आलस्ययुक्त हुए?

9. सीता कहाँ और कैसे सोई?

15.4 मूलपाठ

लक्ष्मण- एष विन्ध्याटवीमुखे विराधसंवादः।

सीता- अलंदाव एदिशा। पेक्खम्मि दाव अज्जउत्तसहत्तध रिदतालबुन्तादवत्त-निवारिदादपं दक्खिणारण्णप्पवेशारम्भम्। (अलं तावदेतेन। पश्यामि तावदार्यपुत्रस्वहस्तधृततालवृन्तातपत्रनिवारितातपमात्मनो दक्षिणारण्यप्रवेशारम्भम्।)

एतानि तानि गिरिनिर्झरिणीतटेषुवैखानसाश्रिततरूणि तपोवनानि।
येष्वातिथेयपरमा यमिनो भजन्ते नीवारमुष्टिपचना गृहिणो गृहाणि।।25।।

अन्वय-

लक्ष्मण - एष विन्ध्याटवीमुखे विराधसंवादः।

सीता- अलं तावद् एतेन। पश्यामि तावद् आर्यपुत्रस्वहस्तधृतताल-वृन्तातपत्रनिवारितातपम् आत्मनो दक्षिणारण्यप्रवेशारम्भम्।

गिरिनिर्झरिणीतटेषु वैखानसाश्रिततरूणि एतानि तानि तपोवनानि (सन्ति) येषु आतिथेयपरमाः नीवारमुष्टिपचना यमिनो गृहिणः गृहाणि भजन्ते।।25।।

अन्वयर्थ-

लक्ष्मण- एषः- यह, विन्ध्याटवीमुखे - विन्ध्यारण्य के आरम्भ में, विराधसंवादः - विराध राक्षस के संवाद का, वृत्तान्तः - वृतान्त है।

सीता- अलम् - पर्याप्त (रहने दो), तावत् - तो, एतेन - इससे, तावत् - तो, आर्यपुत्रस्वहस्तधृततालवृन्तातपत्रनिवारितामपम् - आर्यपुत्र, स्वामी श्रीराम से, स्वहस्तेन - अपने हाथ से, घृतम् -गृहीत, तालवृन्तम् - तालपत्र- रूपम्, आतपत्रम् - छत्र से, विवारित - धूम से गर्मी, जिसमें, **आत्मनः** - अपने, दक्षिणारण्यप्रवेशारम्भम् - दक्षिणारण्य में प्रवेश का, आरम्भ को, पश्यामि - देखती हूँ।

गिरिर्झरिणीतटेषु - पर्वत नदी के किनारे में, बैखानसाश्रिततरुणि - वानप्रस्थ आश्रम का सेवन करने वाले तपस्वी, एतानि - इन, तानि - उन- प्रसिद्ध, तपोवनानि - तपोवन है, येषु - जिन तपोवनों में, आतिथेयपरमाः- अतिथिसत्कार प्रधानः, नीवारमुष्टिपचना - मुष्ठिभर अन्न को पकाने वाले, यमिनः- सन्यासी मुनि, गृहिणः - गृहस्थ, गृह से विनाश करने वाले, भजन्ते- सेवन करते है।

व्याख्या:-

लक्ष्मण उन दोनों को विराध राक्षस का संवाद दिखाता है। विन्ध्यारण्य में प्रवेश करके विराध नामक राक्षस ने राम और लक्ष्मण को खाने का प्रयत्न किया किन्तु राम ने उस राक्षस को मार दिया। इस वृतान्त के अनिष्ट के कारण सीता उस चित्र को देखना नहीं चाहती थी। अत: वह दक्षिणारण्य में प्रवेश को देखती है। जहाँ श्रीराम तालवृन्त को आतपत्र (छाता) करके धूप से निवारण को चेष्टा करते हैं।

इस चित्र में राम, सीता और लक्ष्मण विन्ध्यारण्य में प्रविष्ट हुए। चित्र को देखकर श्रीराम मुग्ध होकर विध्न्यारण्य के वर्णन में प्रवृत हुए। विन्ध्यपर्वत में यह अरण्य है। अत: अरण्य के समीप में ही पार्वती नदी स्वच्छन्द प्रवहित हो रही है। यह अरण्य मनुष्य रहित नहीं है क्योंकि उनके वृक्षों के नीचे वार्धक्यकाल में वानप्रस्थाश्रम का आश्रय लेकर लोग निवास करते हैं। इस वन में बहुत से मुनि सपरिवार निवास करते हैं। वे मुनि मुष्ठिभर नीवारधान्य को खाकर ही जीवन धारण करते हैं और भी वन में आने वाले सभी लोगों का अतिथि ज्ञान से सम्यक रूप से सत्कार आदि करते हैं। इस प्रकार वे ''अतिथि देवो भव'' इस उपनिषद वाक्य का सम्यक पालन करते हैं। ऐसा राम कहना चाहते हैं। इस प्रकार के पुण्यवाले मुनिजन तपस्या करते हुए वानप्रस्थियों का संबंध होने से विन्ध्यारण्य तपोवन हो गया। अत: वहाँ जाकर वे धन्य ही हुए।

व्याकरण विमर्श:-

निर्झरिणी -निर्झरशब्दात् इनिप्रत्यये डीपि च निर्झरिणी इति रूपम्।

वैखानसाश्रिततरूणि -वैखानसै: आश्रिता: तरव: येषु तथोक्तानि इति बहुव्रीहिसमास:।

छन्द-

उन दोनों श्लोकों में वसन्ततिलका का छन्द है।

पाठगत प्रश्न 15.3

10. विन्ध्याटवी में किसका संवाद था?
11. विन्ध्यारण्य में वृक्ष कैसे थे?
12. मुनि क्या खाते थे?

15.5 मूलपाठ

लक्ष्मण- अयमविरलानोकहनिवहनिरन्तरस्निग्धनीलपरिसरारण्यपरिणद्ध-गोदावरीमुखरकन्दर: सन्ततमभिष्यन्दमानमेघमेदुरितनीलिमाजनस्थानमध्यगो गिरि: प्रस्रवणो नाम।

स्मरसि सुतनु तस्मिन्पर्वते लक्ष्मणेन
प्रतिविहितसपर्यासुस्थ्योस्तान्यहानि।

टिप्पणी

स्मरसि सरसनीरां तत्र गोदावरीं वा
स्मरसि च तदुपान्तेष्वावयोर्वर्तनानि।।26।।

किं च,

किमपि किमपि मन्दं मन्दमासत्तियोगा
दविरलितकपोलं जल्पतोरक्रमेण।
अशिथिलपरिरम्भव्यापृतैकैकदोष्णो
रविदितगतयामा रात्रिरेव व्यरंसीत्।।27।

अन्वय-

लक्ष्मण अयम् अविरलानोकहनिवहनिरन्तरस्निग्धनील- परिसरारण्यपरिणद्धगोदावरामुखरकन्दरः सन्ततम् अभिष्यन्दमानमेघमेदुरितनीलिमा जनस्थानमध्यगो प्रस्रवणो नाम गिरिः।

सुतनु तस्मिन् पर्वते लक्ष्मणेन प्रतिविहितसपर्यासुस्थयोः (आवयोः) तानि अहानि स्मरसि (अथवा) तत्र सरसनीरां गोदावरीं स्मरसि (तथा च) तदुपान्तेष आवयोः वर्तनानि च स्मरसि।।26।।

किं च, आसत्तियोगात् किमपि मन्दम् अविरलितकपोलम् अक्रमेण जल्पतोः, अषिथिलपरिम्भव्यापृतैकदोष्णोः अविदितगतयामा रात्रिः एवं व्यरंसीत्।।27।।

अन्वयार्थ-

लक्ष्मण- अयम्-यह, अविरलानोकहनिवह निरन्तरस्निग्धनील परिसरारण्यपरिणद्धगोदावरा **मुखरकन्दरः** -सघन पादपावलियों से निरन्तर स्निग्ध तथा श्यामवर्ण वाले वन के भागों से युक्त गोदावरी की तरंगों से आस्फालित होने के कारण मुखरित गुफाओं वाला तथा सन्ततम्- लगातार अभिष्यन्दमानमेघमेदुरितनीलिमा- बरसने वाले मेघों से और भी अधिक नीलिमा धारण करने वाला, जनस्थानमध्यगो- जनस्थान के मध्य भाग में स्थित, प्रस्रवणो नाम गिरि 'प्रस्रवण'- नाम का पर्वत है।

सुतन-सुन्दरित तनु, तस्मिन् पर्वते- उस 'प्रस्रवण' पर्वत में, लक्ष्मणेन - लक्ष्मण के द्वारा, प्रतिविहितसपर्यासुस्थयोः (आवयोः)- दी गई सेवा से प्रसन्न हम दोनों के, तानि अहानि- उन सुखमय दिनों का, तत्र सरसनीरां गोदावरीं- निर्मल जल वाली गोदावरी नदी का, तदुपान्तेषु आवयोः वर्तनानि च- और उनके किनारे पर हमारे विहार का स्मरसि -स्मरण करती हो या (नही)

किं च- और भी, आसत्तियोगात् किमपि मन्दम् -जहाँ पास-पास कपोल से कपोल सटाकर तथा अविरलितकपोलम्- परस्पर एक दूसरे की अक्रमेण जल्पतोः, अशिथिलपरिम्भव्यापृतैकदोष्णो- भुजाओं के दृढ़ आलिंगन में बन्ध कर धीरे-धीरे, अविदितगतयामा रात्रिः एवं व्यरंसीत -इधर-उधर की बाते करते हुए विना पता चले हम दोनों की रात ही बीत जाया करती थी।

व्याख्याः-

लक्ष्मण चित्र में जनस्थान नामक अरण्य में स्थित 'प्रस्रवण' नामक पर्वत को देखकर उसके प्राकृतिक सौन्दर्य का वर्णन करते हैं। यह पर्वत धनारण्य से परिपूरित है। इस पर्वत में गोदावरी नदी प्रवाहित होती थी। उसके किनारे पर श्यामलवन राजा शोभायमान था। पर्वत की कन्दराएं भी नदी के कल कल रव से मुखरित थी। मेघ निरन्तर वर्षा करते हुए पर्वत के ऊपर विद्यमान पादप समूह को ओर स्निग्ध करते थे।

यहाँ राम चित्र को देखकर प्रस्रवण पर्वत में उनका जीवन कैसा था, उसका स्मरण करते हैं। जब दोनों उस पर्वत पर थे तब भाई लक्ष्मण निरन्तर उनकी सेवा करते थे। निवास करते हुए उन दोनों को कोई कष्ट नहीं था। वे दोनों सुख से वहां दिनों को व्यतीत कर रहे थे। उसी पर्वत में जल से परिपूर्ण गोदावरी नदी बहती थी। राम और सीता प्रायः उस नदी के किनारे भ्रमण करते थे। कभी-कभी वहां बैठकर वार्तालाप करते थे। चित्र में उस पर्वत को देखकर राम को यह सब कुछ याद आता है। सीता वह सब कुछ स्मरण करती है या नहीं यह उससे पूछते है। इस प्रकार कथोपकथन से उनके चित्र दर्शन में प्रवृत होते है।

इस प्रकार कभी कभी वे दोनों गोदावरी नदी के किनारे आकर वार्तालाप करना प्रारम्भ करते। वार्तालाप काल में उनकी रात्रि शीघ्र ही चली जाती। अर्थात् दोनो परस्पर वार्तालाप में मग्न हो जाते थे कि उनको समय ज्ञान भी नहीं रहता। इस प्रकार वनवास काल में उनके सुखपूर्वक दिन व्यतीत हुए।

व्याकरण विमर्श-

परिणद्ध- परिपूर्वकात् नह्धातोः क्तप्रत्यये परिणद्धः इति रूपम्।

मुखर- मुखशब्दात् रप्रत्यये मुखरः इति रूपम्, स्वमुखकुञ्जेजभ्यो वक्तव्यम् इति वर्तिकेन रप्रत्ययः।

अभिष्यन्दमान- अभिपूर्वकात् स्यन्द्धातोः शानच्प्रत्यये अभिष्यन्दमानः इति रूपम्।

नीलिमा- नीलस्य भावः, नीलशब्दात् इमनिच्प्रत्यये नीलिमा इति रूपम्।

प्रतिविहितसपर्यासुस्थयो- प्रतिविहितसपर्यया सुस्थयोः प्रतिविहितसपर्यासुस्थयोः इति तृतीयातत्पुरुषः।

आसत्तियोगात्- आङ्पूर्वकात् सद्-धातोः क्तिन्प्रत्यये विभक्त्यादिकार्ये आसत्तिः इति रूपम्। **आसत्तेः** योगः आसक्तियोगः, तस्मात् आसक्तियोगात् इति षष्ठीतत्पुरुषः।

व्यरंसीत्- विपूर्वकात् रम्-धातोः लुङ्लकारे प्रथमपुरुषैकवचने व्यरंसीत् इति रूपम्।

छन्द- स्मरसित सुतनु एवं किमपि किमपि - इस दोनों श्लोको में मालिनी छन्द है।

अलंकार विमर्श-

1. स्मरसित सतनु श्लोक में एकस्य त्वम् इस कर्ता का स्मरसि क्रिया से संबंध होने के कारण दीपक अलंकार है जिसका लक्षण- 'अथ कारकमेकं स्यादनेकासु क्रियासु चेत्'

पाठगत प्रश्न 15.4

13. प्रस्रवण पर्वत कहां था?

14. वे दोनों किस नदी के किनारे भ्रमण करते थे?

15. रात्रि कैसे व्यतीत होती है?

16. वे दोनों कैसे वार्तालाप करते थे?

17. व्यरसीत में धातु एवं लकार बताइए।

टिप्पणी

15.6 मूलपाठ

लक्ष्मण- एषा पंचवटयां शूर्पणखा।

सीता- हा अज्जउत्त, एत्तिअं दे दंसणं। (हा आर्यपुत्र, एतावत् ते दर्शनम्।)

राम- अयि विप्रयोगत्रस्ते, चित्रमेतत्।

सीता- जहा तहा होदु। दुज्जणो असुहं उप्पदेइ। (यथा तथा भवतु। दुर्जनः असुखमपुत्पादयति।)

रामः हन्त, वर्तमान इव मे जनस्थानवृत्तन्तः प्रतिभाति।

लक्ष्मण- **अथेदं रक्षोभिः कनकहरिणच्छद्मविधिना**
तथा वृत्तं पापैर्व्यथयति यथा क्षालितमपि।
जनस्थाने शून्ये विकलकरणैरार्यचरितै
रपि ग्रावा रोदित्यपि दलतित वज्रस्य हृदयम्।।28।।

अन्वय-

लक्ष्मण- एषा पंचवटयां शूर्पणखा।

सीता- हा आर्यपुत्र, एतावत् ते दर्शनम्।

राम- अयि विप्रयोग=स्ते, एतत् चित्रम्।

सीता- यथा तथा भवतु। दुर्जनः असुखमुत्पादयति।

राम- हन्त, वर्तमान इव मे जनस्थानवृत्तान्तः प्रतिभाति।

लक्ष्मण- अथ पापैः रक्षोभिः कनकहरिणच्छद्मविधिना इदं तथा वृत्तं यथा क्षालितम् अपि व्यथयति। शून्ये जनस्थाने विकलकरणैः आर्यचरितैः ग्रावा अपि रोदिति वज्रस्य (अपि) दलित हृदयम्।।28।।

अन्वयार्थः-

लक्ष्मण- एषा-यह, पंचवटयां शूर्पणखा -पंचवटी में शूपर्णखा विवाद का दृश्य है।

सीता- हा आर्यपुत्र, एतावत् ते दर्शनम् -बस यही तक आपका दर्शन था (इसके बाद मेरा हरण कर लिया गया था।)

राम- अयि विप्रयोगत्रस्ते -अरे यह तो तुम्हार वियोग है। एतत् चित्रम्- यह तो चित्र है (घबराओ मत)

सीता- यथा तथा भवतु -चाहे जो हो, दुर्जनः असुखमुत्पादयति- दुर्जन अनिष्ट उत्पन्न करता ही है।

राम- हन्त, वर्तमान इव मे जनस्थानवृत्तान्तः प्रतिभाति-हां मुझे तो जनस्थान का वृतान्त प्रत्यक्ष सा लग रहा है।

लक्ष्मण- अथ -तदनन्तर, पापैः रक्षोभिः- उन नीच राक्षसों ने, कनकहरिणच्छद्मविधिना- सुवर्ण मृग के छल से, इदं तथा वृत्तं यथा क्षालितम् अपि व्यथयति- ऐसा दुष्कर्म किया जो कि प्रतिकार किये जाने पर भी हमको पीडित कर रहा है। शून्ये जनस्थाने- उस निर्जन जन स्थान में, विकलकरणैः आर्यचरितैः -विकल इन्द्रियो वाले आर्य के चरित्रों से मूर्छा आदि व्यापारों से, ग्रावा अपि रोदिति वज्रस्य (अपि) दलित हृदयम्- एक बार तो पत्थर भी रो उठता है। और वज्र का हृदय भी टुकड़े हो जाता है।

व्याख्या-

लक्ष्मण चित्र में पंचवटी में शूपर्णखा को दिखाता है। तब सीता अशुभ को देखना नहीं चाहती हुई, राम को कहती है कि इतने तक ही चित्र दर्शन हो। तब राम सीता को कहते हैं यह चित्र है वास्तविक वियोग नहीं है। चिन्ता मत करो। तब सीता कहती है जैसे किसी भी प्रकार से दुर्जन तो दुःख का ही कारण होता है। उसके बाद लक्ष्मण चित्र को देखकर वर्णन करते हैं जब सुवर्ण मृग के छल से सीताहरण राम द्वारा किया गया तब राम का व्यवहार देखकर ग्रावा (पत्थर) भी रोता था। उसके क्रन्दनादि को सुनकर कठोर वज्र का भी हृदय टूट जाता है।

व्याकरण विमर्शः-

पञ्चवटी- पञ्चानां वटानां समाहारः इति विग्रहे निष्पन्नस्य द्विगुसंज्ञकस्य पञ्चवटशब्दस्य अकारान्तत्वाद्'' अकारान्तोत्तरपदो द्विगुः स्त्रियामिष्टः'' इति वार्तिकेन स्त्रीलिङ्ग ततः ङीप्।

छन्द- अथेदमिति श्लोके शिखरिणीछन्दः। तस्य लक्षणं तावत्- ''रसै रुद्रेश्छिन्ना यमनभसलाः गः शिखरिणी'' इति।

अथदेम्- इस श्लोक में शिखरिणी छन्द है उसका लक्षण है।

रसै रुदैश्छिन्ना यमनसभलागः शिखरिणी

पाठगत प्रश्न 15.5

18. दुर्जन क्या उत्पन्न करते है?

19. सीताहरण कैसे राक्षस ने किया?

20. रामचरित से क्या-क्या होता है?

पाठसार

इससे आगे सीता शृंगवेरपुर में रामलक्ष्मण के जटाबन्धन के चित्र को देखती है। उसके बाद लक्ष्मण राम की प्रशंसा करता हुए कहते हैं। इक्ष्वाकुवंशीय राजा वार्धक्य काल में सम्पत्ति आदि को पुत्रों को समर्पित करके वानप्रस्थ के व्रत का आचरण करते हैं। इसका श्रीराम ने बाल्य-काल में आचरण किया। तदनन्तर सीता चित्र में पुण्य सलिला भागीरथी गंगा को देखती है। राम कहते हैं कि बहु काल पूर्व सगर नामक एक राजा ने अश्वमेध यज्ञ किया। उसके अश्वमेध यज्ञ के अश्व को इन्द्र कपट से चुराकर गुप्त स्थान पर स्थापित किया। अश्व के बिना यज्ञ की समाप्ति नहीं होगा। अत: सगर के 60 हजार पुत्रों ने अश्व का अनुसन्धान करते हुए पृथ्वी को खोदते हुए महर्षि कपिल के क्रोध से भस्मीभूत हो गये। भागीरथि जल के स्पर्श से ही वे पुन: उद्धार को प्राप्त होंगे। ऐसा जानकर बहुत काल के बाद सगर के प्रपौत्र भगीरथ ने कठोर तपस्या करके भागीरथी को भूलोक पर लाये। उसके जल से उनका उद्धार किया। यही भागीरथी रघुवंश की देवी है। अत: राम उसको उद्देश्य करके प्रणाम करते हैं।

उसके बाद लक्ष्मण चित्र में यमुना नदी के तट पर अवस्थित श्याम नामक वटवृक्ष को दिखाते हैं। जो वृक्ष उनके चित्रकुटवन गमन के समय मार्ग में प्राप्त हुए। राम उस वृक्ष के नीचे घटित वृतान्त का वर्णन करते हैं। मार्ग के परिश्रम से थकी सीता राम के हृदय पर राम से दृढ़ आलिंगन करती हुए सोती है।

उसके बाद लक्ष्मण विराध राक्षस के वृतान्त को दिखाता है। किन्तु सीता उस चित्र को न देखकर दक्षिणारण्य में उनके प्रवेश के चित्र को देखना प्रारम्भ करती है। यहाँ श्री राम ने उनकी धूप दूर करने के लिए तालवृन्त को छाता बनाया था। उसके बाद राम विन्ध्यारण्य का वर्णन करते हैं। उस तपोवन में वृक्षों के नीचे वानप्रस्थाश्रमी और गृहस्थ मुष्ठिभर अन्न के खाते हुए अतिथि सरकार परायण मुनि जन पत्नियों के साथ निवास करते हैं।

उसके बाद लक्ष्मण प्रस्रवण नामक पर्वत को दिखाता है। कि यह पर्वत जनस्थान नामक वन में था। यह पर्वत धनारण्य से परिपूर्ण था। इस पर्वत में गोदावरी नदी बहती थी। इसके किनारे पर श्यामल वनराज शोभायमान थे। पर्वत की कन्दरा, भी नदी की कल कल रव से मुखरित हुए थी। मेघों लगातार वर्षा के कारण पर्वत के ऊपर विद्यमान पादप समूह स्निग्ध हो गये थे। उसके बाद राम की गोदावरी नदी के किनारे पर उनके भ्रमण लक्षण द्वारा वार्तालाप रत गोदावरी के किनारे सम्पूर्ण रात्रि को व्यतीत करते थे यह भी स्मरण है। इस प्रकार गोदावरी वृतान्त समाप्त होता है।

टिप्पणी

उसके बाद पंचवटी में शूर्पणखा वृतान्त को लक्ष्मण देखते है। परन्तु वहां सीता का आग्रह नहीं है। क्योंकि चित्र को देखकर सीता खिन्न होती है। दुर्जन किसी भी प्रकार दु:ख को ही उत्पन्न करता है उसके बाद सीता हरण के बाद राम के क्रन्दनादि व्यापार से ग्रावा (पत्थर) भी रोता है और वज्र का हृदय भी विदीर्ण होता है इस प्रकार संक्षेप में पाठ का सार प्रस्तुत है।

आपने क्या सीखा

- राम सीता के विशेष गुण।
- भागीरथी, श्यामवृक्ष, प्रस्रवण पर्वत विन्ध्यारण्य के बारे में जाना।
- राम सीता के सुदृढ़ प्रेम को जाना।
- दीर्घ पदों का विग्रह एवं समासों को जाना।

पाठन्तप्रश्नः-

1. गंगामन वृतान्त, सविस्तार वर्णन करो।
2. अलसलुलित श्लोक का अपने अनुसार वर्णन करो।
3. उनका दक्षिणारण्य में प्रवेश कैसे था।
4. प्रस्रवण पर्वत का वर्णन करो।
5. मुनि विन्धयारण्य में कैसे जीवन व्यतीत करते थे।
6. राम और सीता ने नदी गोदावरी के किनारे रात्रि कैसे व्यतीत की।
7. किमपि, किमपि इस श्लोक की व्याख्या करो।
8. अथेद रक्षोभि - श्लोक की व्याख्या करो।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

15.1

1. जटावन्धन श्रृंगवेरपुर में हुआ।
2. वार्धक्यकाल में।
3. भागीरथी का जल निर्मल व पवित्र था।
4. सगर प्रपोत्र भागीरथ।
5. वह सीता अरुन्धती के समान मंगल अनुध्या हो यह श्रीराम की प्रार्थना है।

टिप्पणी

15.2

6. श्याम वट वृक्ष।
7. कालिन्दी नदी के किनारे।
8. मार्गगमन के परिश्रम के कारण आलस्य युक्त है।
9. सीता अपने अवयवों को राम के वक्ष पर रखकर सोई।

15.3

10. विराधसंवाद था।
11. वैखानसाश्रित वृक्ष थे।
12. मुनि मुष्ठि भर नीवार धान्य खाते थे।

15.4

13. प्रस्रवण पर्वत जनस्थान नामक स्थान पर था।
14. वे दोनों गोदावरी नदी के किनारे भ्रमण करते थे।
15. रात्रि वार्तालाप करते हुए व्यतीत होती थी।
16. वे दोनों बिना काम से वार्तालाप करते थे।
17. वि उपसर्ग रम् धातु लुङ्-लकार प्रथमपुरुष एकवचन में 'व्यरंसीत्' रूप बनता है।

15.5

18. दुर्जन दु:ख ही उत्पन्न करता है।
19. सुवर्णमृग के छल से राक्षस ने हरण किया।
20. रामचरित से ग्रावा (पत्थर) भी रोये, वज्र का हृदय भी टूटा।

कादम्बरी में शुकनासोपदेश

भूमिका

कवि का कर्म काव्य होता है। वह काव्य लोगों के कानों में अमृतधारा प्रवाहित करता है। वर्णनीय के साथ ऐकात्म्य व अनुभवता सहृदयों के मन में आनंद और उल्लास को पैदा करता है। काव्य कान्तासम्मित उपदेश (प्रिया के उपदेश) से सब लोगों के मन में आह्लाद पैदा करता है। उनमें महाकाव्यादि दर्शन योग्य होने से दृश्य और श्रवण योग्य होने से श्रव्य काव्य होता है। पुनः श्रव्यकाव्य गद्य और पद्य भेद से दो प्रकार का होता है। उनमें छन्दोबद्ध पद्य एवं वृत्त वन्धोज्झित अर्थात् छन्द रहित गद्य होता है।

कुछ विद्वानों के मत में सर्वप्रथम पद्य काव्य का उद्भव हुआ। इसके बाद में गद्य काव्य का। गद्यकाव्य की संरचना में दृढ़ता की अत्यावश्यकता है। इस कारण यह उक्ति प्रसिद्ध है। गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति। गद्यकाव्य के भी कथा और आख्यायिका दो भेद हैं। उनका लक्षण है – कथा कल्पितवृतान्ता सत्यमाख्यायिका स्मृता।

गद्य काव्य निर्माण परम्परा में बाणभट्ट ही प्रधान आचार्य हैं इसमें कोई संशय नहीं है। उनके द्वारा विरचित कादम्बरी गद्यकाव्य का गद्यकाव्यों में महान स्थान है। इसमें वर्णन सौन्दर्य अनुपम है। गद्य काव्य में सर्वत्र ही अलंकारों की मधुर झंकार सहृदयों के मन में परमोल्लास पैदा करता है और हृदय को विकसित करता है। कादम्बरी मदिरा को कहते है। सुमधुर यह कादम्बरी रूपी मदिरा रस सम्प्रदायी सहृदयजनों को आनन्द और उल्लास देने वाली है। अतः इस ग्रन्थ का नाम सार्थक है। अतएव बाणभट्ट के पुत्र पुलिन्द भट्ट की उक्ति है – कादम्बरीरसभरेण समस्त एवं मत्तो न किंचितदपि चेतयते जनोखयम्। इस ग्रन्थ के पूर्व भाग का निर्माण करके बाणभट्ट दिवंगत हो गये तब उनके पुलिन्द भट्ट ने उत्तर भाग की रचना की।

कादम्बरी कथा है या आख्यायिका इस विषय में विद्वानों में मत भेद है। बहुत से विद्वान इसे कथा मानते है और कुछ आख्यायिका।

कादम्बरी के कथा भाग के एक अंश शुकनासोपदेश इस पुस्तक का प्रतिपाद्यमान विषय है। शुकनासोपदेश कथा के पूर्व भाग का संक्षेप कथा प्रवाह निम्न प्रकार से है-विदिशानगरी में राजा शूद्रक के लिए एक चाण्डाल कन्या मनुष्यवाणी में बोलने वाले शुक (तोता) देती है। उस पक्षी शुक के वाक् कौशल से विस्मित होकर राजा शूद्रक उससे परिचय पूछते हैं। वह पक्षी भी राजा शूद्रक के सभी जन्म जन्मान्तरों के वृतान्त को सुनाता है। उसके बाद उस शुक ने राजा से कहा कि मेरे पिता व्याध (शिकारी) के आक्रमण से मारे गये एव वह स्वयं भूमि पर गिर गया। उसके बाद महर्षि जाबालि के पुत्र उसे आश्रम ले गये। उस पक्षी को देखकर महर्षि जाबालि ने कहा कि यह अपने दुष्कर्मों का फल भोग कर रहा है। वहाँ आश्रम में उपस्थित सभी बालकों ने महर्षि जाबालि से उस शुक के बारे में पूछा। उसके बाद जाबालि ऋषि उस शुक के जन्म जन्मान्तरों के विषय में कहते हैं कि-

टिप्पणी

अवन्ति देश में एक उज्जयनी नामक स्थान था वहां तारापीड नामक राजा विलासवती नामक पत्नी एवं शुकनास नामक अमात्य के साथ राज्य करता था। शुकनास की पत्नी मनोरमा एवं रानी विलासवती के कोई सन्तान नहीं थी। सन्तान प्राप्ति के लिए मनोरमा एवं विलासवती ने व्रत को धारण किया। उसके फलस्वरूप दोनों को पुत्र की प्राप्ति हुई। राजा के पुत्र का नाम चन्द्रापीड़ एवं मंत्री के पुत्र का नाम वैशम्पायन रखा। उसके बाद वे दोनों अपने द्वार से अध्ययन के लिए गुरू के पास गये। वहाँ उन्होंने शास्त्र एवं शस्त्र विद्या प्राप्त की। शिक्षा प्राप्त करने के बाद राज्य में आकर चन्द्रापीड का यौवराज्यभिषेक किया गया। शुकनास के राज्याभिषेक के अवसर पर मंत्री शुकनास ने चन्द्रापीड़ को राजकार्यादि के परिचालन हेतु उपदेश दिया। यह उपदेश कादम्बरी के शुकनासोपदेश के नाम से प्रसिद्ध है।